पौराणिक गृह वास्तु में शुभवृक्ष एवं वनस्पतियाँ

डॉ. रीझन झारिया

संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग रा.दु.वि. विद्यालय, जबलपुर, (म.प्र.) भारत

निवास योग्य गृह में कौन कौन से वृक्ष लगाने चाहिए कौन से वृक्ष नहीं लगाने चाहिए इस पर भारतीय मनीषियों ने तो काफी चिन्तन किया है वृक्ष वास्तु के संदर्भ से भारतीय ऋषियों पौराणिक गृह वास्तु के लिए वृक्षों एवं वनस्पतियॉ का ठोस चिन्तन इस प्रकार है।

यत्र तत्र वृक्षा, बिल्बवृक्ष, बिल्वदाडिम्केशराः।
पनसो नरिकेलश्च शुभं कुर्वन्ति नित्यशः।।[1]

(पर्यावरण वास्तु शास्त्र १/५०)

आवासीय गृह के समीप बेल (बिल्ववृक्ष) अनार (दाड़िम), नागकेसर, कटहल और नारियल के वृक्ष हमेशा शुभफलकारी होते है।

गृहों में लगाने योग्य वृक्ष :–
जम्बीरश्च रसालश्च रम्भा शेफालिकास्तथा।
यवाशेक शिरीषश्च मल्लिकाद्याः शुभप्रदाः।।[2]

(पर्यावरण वास्तुशास्त्र २/५०)

जंभीरी, आम्र, केला, निर्गुड़ी जौ, अशोक, शिरसा और चमेली आदि सुगन्धित वृक्ष घर में समीप शुभ होते है

गृह के समीप वृक्ष लगाना अत्यन्त शुभ दायक व कल्याणकारी होता है वृक्ष हमारे तथा आसपास के वातावरण को शुद्ध रखता है गृह स्थल में पुराणकारों ने कहा कि गृह के समीपस्थ अशोक, पुन्नाग, मौलसिटी, शमी, चम्मा, अर्जुन, कटहल, केतकी, चमेली, पाटल, नारियल, नागकेशर, अड़हुल, महुआ, वट, सेमल, बकुल, शाल आदि वृक्ष गृह के पास शुभ होता है।

गृह के उत्तर भाग में पाकर, पूर्व में बरगद, दक्षिण, में गूलर और पश्चिम में पीपल का वृक्ष लगाना उत्तम माना है।[३४]

बाये भाग में उद्यान बगीचा लगाना शुभ दिन में गृहवास करना चाहिए गृह के नजदीक पाकर, गूलर, आम, नीम, बहेड़ा, पीपल, कपित्थ, अगस्त्य, बेर, निर्गुण्डी, इमली, कदम्ब, केला, नीबू, अनार, खजूर, बेल आदि वृक्ष गृह के पास अशुभ है।

कई वृक्ष ऐसे है जो दिशा विशेष में स्थित होने पर शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले हो जाते हैः जैसे –

पूर्व में पीपल भय तथा निर्धनता देता है परंतु बरगद कामना–पूर्ति करता है। आग्नेय में वट, पीपल, सेमल, पाकर तथा गूलर पीड़ा और मृत्यु देने वाले है। परंतु अनार शुभ है।

दक्षिण में पाकर रोग तथा पराजय देने वाला है, और आम, कैथ, अगस्त्य तथा निर्गुण्डी धननाश करने वाले है। परंतु गूलर शुभ हैं।

नैऋत्य में इमली शुभ है।

दक्षिण नैर्ऋत्य में जामुन और कदम्ब शुभ है।

पश्चिम में वट होने से राजपीड़ा, स्त्रीनाश व कुलनाश होता है, और आय, कैथ, अगस्त तथा निर्गुण्डी धननाशक हैं। परंतु पीपल शुभदायक है।

वायव्य में बेल शुभदायक है।

उत्तर में गूलर नेत्ररोग तथा ह्रास करने वाला है। परंतु पाकर शुभ है।

ईशान में ऑवला शुभदायक है।

ईशान –पूर्व में कटहल एवं आम शुभदायक हैं।

गृह के पास कॉटेवाले, दूधवाले तथा फलवाले वृक्ष स्त्री और सन्तान की हानि करने वाले हैं। यदि इन्हें काटा न जा सके तो इनके पास शुभ वृक्ष लगा दें।

कॉटे वाले वृक्ष शत्रु से भय देने वाले, दूधवाले वृक्ष धन का नाश करने वाले और फलवाले वृक्ष सन्तान का नाश करने वाले है। इनकी लकड़ी भी घर में नहीं लगानी चाहिए।

आसन्नाः कष्टकिनो रिपुभयदाः क्षीरिणोऽर्थनाशाय।
फलिनः प्रजाक्षयकरा दारूण्यपि वर्जयेदेषाम्।।

(वृहत्संहिता ५३/८६)

बदरी कदली चैव दाडिमी बीज पूरिका।
प्ररोहन्ति गृहे यत्र तद्गृहं न प्ररोहति।।[4]

(समरागण सूत्रधार ३८/१३६)

'बेर, केला, अनार तथा नीबू जिस घर में उगते हैं, उस घर की वृद्धि नहीं होती।

'पीपल, कदम्ब, केला, बीजू, नीबू – ये जिस घर में होते है, उसमें रहने वाले को वंशवृद्धि नहीं होती।'

अश्वत्थं च कदम्बं च कदलीबीजपूरकम
गृहे यस्य प्ररोहन्ति स गृही न प्ररोहति।।[5]

(ब्रहदैवज्ञ ८७/६)

पीपल, कदम्ब, केला, बीजू, नीबू ये जिस घर में होते हैं उसमें रहने वाले की वंशवृद्धि नहीं होती।

गृह के भीतर लगायी हुई तुलसी मनुष्यों के लिए कल्याणकारिणी, धन–पुत्र प्रदान करने वाली, पुण्यदायिनी तथा हरिभक्ति देने वाली होती है। प्रातः काल तुलसी का दर्शन करने से सुवर्ण–दान का फल प्राप्त होता है।[6]

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्ण १०३/६२–६३)

अपने गृह से दक्षिण की ओर तुलसी वृक्ष का रोपण नहीं करना चाहिए, अन्यथा यमयातना भोगनी पड़ती है।

(भविष्यपुराण म.६)

मालतीं मल्लिकां मोचां चिच्चां श्वेतां पराजिताम्।
वास्तुन्यां रोपयेद्यस्तु स शस्त्रेण निहन्यते।।[7]

(वास्तुसौख्यम् पृ.क्र.३८)

मालती, मल्लिका, मोचा (कपास) इमली, श्वेता (विष्णुक्रान्ता) और अपराजिता को वास्तु भूमि पर लगता है, वह शस्त्र से मारा जाता है।

वाटिका (बगीचा) जो घर से पूर्व, उत्तर पश्चिम या ईशान दिशा में वाटिका बनाता है, वह सदा गायत्री से युक्त, दान देने वाला और यज्ञ करने वाला होता है। परंतु जो आग्नेय दक्षिण, नैर्ऋत्य या वायव्य में वाटिका बनाता है, उसे धन और पुत्र की हानि तथा पर लोक में अपकीर्ति प्राप्त होती है। वह मृत्यु को प्राप्त होता है। वह जाति भ्रष्ट व दूराचारी होता है।

दिन के दूसरे और तीसरे पहर यदि किसी वृक्ष, मंदिर आदि की छाया मकान पर पड़े तो वह सदा दुःख रोग देने वाली होती है।

गृह के पास वृक्ष और पौधे लगाना शुभ भी माना गया है जिससे गृह निवास स्थल तथा आसपास के वातावरण जीवन शैली तथा परम्पराओं में अति महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं गृह के पास लगाये जाने वाले वृक्ष तथा वनस्पतियों का वर्णन गृह वास्तु द्वारा किया जा रहा है जो इस प्रकार है।

1- अश्वत्थ :–____(पीपल का वृक्ष) पीपल का वृक्ष यह सबसे अधिक शुभ और दिव्य वृक्ष माना जाता है। पूरे देश में इसकी पूजा की जाती है। भगवान श्री ने कहा वृक्षों में ''अश्वत्थ'' हूँ। आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि इस वृक्ष द्वारा ऑक्सीजन बहुत शक्तिशाली, भारी और शाखाओं के नीचे घनी होती है। सूर्योदय से पूर्व इस वृक्ष के चारों ओर चक्कर लगाना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक माना जाता है। भारतीय परंपरा के अनुसार इसे प्रत्येक

मंदिर के निकट लगाना आवश्यक होता है। इसकी जड़े बहुत दूर तक फैल जाती है। इनकी आयु बहुत लम्बी होती है और इसे किसी भी मकान का भी निषेध है, इसलिए इस वृक्ष को काटने आदि से पर्याप्त दूरी पर लगाना चाहिए

2- तुलसी :– प्रत्येक घर और मंदिरों में तुलसी के पौधे बहुतायत से होते है। तुलसी के बिना दैनिक पूजा या कोई धार्मिक समारोह नहीं होता। इसमें तीव्र और प्रेरणापूर्ण सुगंध होती है। यह विश्वास किया जाता है कि इससे अनेक रोग ठीक हो जाते है। इस पौधे का वैज्ञानिक औषधीय तथा आध्यात्मिक महत्त्व है। तुलसी के पौधे से आयुर्वेद औषधियाँ बनाने में उपयोग की जाती है। यह जहरीलें कीटाणुओं तथा रोग फैलाने वाले कीटाणुओं को नष्ट कर देती है। दमा, यक्ष्मा, कोढ़ आदि रोगों में इसका उपयोग किया जाता है। यह रक्त को शुद्ध करती है तथ पाचन प्रणाली का सुधार करती है।

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि यदि तुलसी की पत्तियों के रस की 15 बूदें तक एक लीटर पेट्रोल में मिला दी जाए तो वाहन की गति को 20 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। सूखे पौधों का हस्तकला के कार्यो तथा तुलसी की पवित्र माला बनाने में उपयोग किया जाता है। इसकी अनेक किस्में होती हैं जैसे कृष्ण तुलसी, सफेद तुलसी, लाल और काली तुलसी, श्री तुलसी लाल, रामतुलसी आदि। पूजा के लिए तुलसी के गमलों को वृदावनी कहते है। इनको भूखण्ड के उत्तर पूर्व कोने में लगाया जाता है और नित्य पूजा की जाती है। इस दिव्य पौधे की तुलना दूसरे पौधों या वृक्षों से नहीं की जा सकती।

3- नीम : इस वृक्ष का बहुत अधिक औषधीय महत्त्व है। यह कीटनाशी के रूप में भी कार्य करता है। नीम तेल का उपयोग भौतिक चिकित्सा में किया जाता है। इसकी पत्तियां स्वाद में बहुत कड़वी होती है। चूर्ण रूप में इसके बीज जल को शुद्ध करते है। समारोहों और पवित्र दिनों के अवसर पर नीम की पत्तियों को प्रवेश द्वार पर बांधना मांगलिक समझा जाता है। गुड़ और नीम की पत्तियों का मिश्रण उगादि के दिन भेंट में दिया जाता है जो इस शपथ को लेने का प्रतिनिधित्व करता है कि जीवन के सुख–दुख को समान भाव से ग्रहण करना है।

4- आम :–इस वृक्ष के अंधिकांश भाग औषधियाँ महत्त्व के है। इसकी पत्तियां कीटनाशी की भांति कार्य करती है और दांतों को मांजने के काम अती है। आम स्वास्थ्य के लिए अच्छा और बहुत स्वादिष्ट होता है। इसका बीज अनेक रोगों को ठीक करने के काम आता है। आमों से अनेक प्रकार के आचार तैयार किया जा सकते हैं। समारोहों और त्योहारों इसकी पत्तियों से बंधनवार बनाकर द्वारों पर लटकाई जाती है तथा कलशपूजा के अवसर पर कलश के चारों और इसकी पत्तियाँ बांधकर उसे सजाया जाता है। इस वृक्ष के तने से लकड़ी के पटरे बनाए जाते है जो आर.सी.सी. केंद्रण तथा अन्य कार्यो में प्रयुक्त होते है। मृतक के शरीर को जलाने के लिए आम की लकड़ियाँ शुभ समझी जाती है। आम के वृक्ष की आयु भी बहुत अधिक होती है, ऐसे अनेक वृक्ष है जो 500–600 वर्षो से अधिक काल से जीवित है और अब भी फल दे रहे है।[४३] यह भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा शुभदायक वृक्ष है।

5- कटहल :– आम के वृक्ष की तरह इसका भी अनके रूपों में उपयोग होता है और इसका अपना महत्त्व है। इस वृक्ष की आयु लंबी होती है। यह अपने मौसम में फल देता है जो आकार में बड़ा होता है। इसके अतिरिक्त इसके पेड़ की लकड़ी सुंदर पीले रंग की होती है जो दरवाजे खिड़कियाँ और फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसकी पत्तियां शुभ समझी जाती है और आम की पत्तियों के विकल्प के रूप में इनका उपयोग कलश को सजाने के लिए किया जाता है।[४४]

6- केला :–इसके पौधे समारोहों में संपन्नता धन के प्रतीक की तरह घरों के प्रवेशद्वार पंडाल आदि सजाने के काम में लाए जाते है। इसकी पत्तियों पर भोजन रखकर खाना स्वास्थ्य समझा जाता है। और इसका काफी प्रचलन है। कच्चे केलों का सब्जियों के तथा पके केलों को फल के रूप में उपयोग किया जाता है। अनेक मंदिरों में कपास के धागे में बंधे फूलों का निषेध है लेकिन वहाँ केले के धागे से बंधे फूल स्वीकार कर लिए जाते है। केला वर्ष भर उपलब्ध रहता है इसलिए भगवान को चढ़ाने वाले भोग में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है।

7- नारियल :–____यह कल्पवृक्ष के रूप में भी प्रसिद्ध है। अश्वत्थ (पीपल) की भांति यह भी एक पवित्र वृक्ष समझा जाता है। इसकी आयु 100 से 150 वर्षो तक भी होती है। इसको काटने का निषेध है। इसका हर अंग मनुष्य के काम में आता है। यह वर्ष भर उपलब्ध रहता है। इसलिए भगवान को भेंट चढ़ाने और कलश को सजाने वाली वस्तुओं में इसका मुख्य स्थान है। देवी–देवताओं की मूतियों को कच्चे नारियल के पानी से नहलाया जाता है। नारियल का पानी स्वास्थ्यवर्धक पेय है। इसके फल से तेल निकाला जाता है। नारियल का छिलका आग जलाने के लिए उच्च श्रेणी की लकड़ी के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके अन्य भागों के उत्पाद है – झाड़ू नारियल की चटाई, दरी आदि का भी उपयोग किया जाता है तथा यह वृक्ष भी शालों की दृष्टि से अत्यंत शुभ माना जाता है।

8- पान का पत्ता :–देवी–देवताओं पर भेंट चढ़ाने से सुपाड़ी तथा पान के पत्ते का उतना ही महत्त्व है जितना नारियल, केले, फूलों और अगरबत्तियों का। ये वस्तुयें वर्ष भर उपलब्ध रहती है। ये पाचन शक्ति को बढ़ाती है। और इसीलिए भरपूर भोजन करने के बाद पान का बीड़ा खाने की सलाह दी जाती है।

9- सुपाड़ी :– भगवान को चढ़ाए जाने वाले भोग का एक महत्त्वपूर्ण भाग पान तथा सुपाड़ी का जोड़ा होता है। सुपाड़ी के कोमल फूलों को सभी धार्मिक समारोहों में बहुत शुभ समझा जाता है। नाग पूजा में प्रयुक्त वस्तुओं में ये अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

10- बिल्व वृक्ष (बेल) :– विष्णु भगवान की पूजा के लिए तुलसी की पत्तियों का उपयोग होता है और शंकर भगवान् की पूजा के लिए बिल्व की पत्तियों का। गणेश जी की पूजा में दूर्वा (एक प्रकार की कोमल घास) का उपयोग किया जाता है। बिल्ववृक्ष की शाखाओं का विभिन्न धार्मिक समारोहों में उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार तुलसी, बिल्व और नीम की पत्तियों के मिश्रण को एक विशेष अनुपात में उपयोग करने से लगभग सभी रोगों में लाभ होता है।

11- चंदन की लकड़ी :– चंदन के सुंगधित लेप के बिना कोई पूजा या धार्मिक समारोह नहीं होता है। विभिन्न हस्तशिल्पों में भी इसका उपयोग होता है। इसके तेल से अगरबत्तियां बनाई जाती है। इसके अतिरिक्त चंदन के तेल का बहुत व्यापारिक महत्त्व है।

12- हल्दी और कुमकुम :–__इन्हें मंगल द्रव्यों के नाम से भी पुकारा जाता है। इनका उपयोग सभी धार्मिक समारोहों और दैनिक पूजा में किया जाता है। इन्हें नित्य देहली पर भी छिड़का जाता है क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि इनसे कीड़े–मकोड़े, कीटाणु और बुरी आत्माए तक भाग जाती है। हल्दी का चूर्ण खाना बनाने में खूब प्रयोग किया जाता है, क्योंकि यह भोजन को सरलता से पचा देता है। इसके अनेक औषधीय उपयोग है। हल्दी का पीला चमकीला रंग और सुगंधि चिन्ताकर्षक होती है। स्नान से पूर्व हल्दी के चूर्ण (पाउडर) को नारियल के तेल में मिलाकर पूरे शरीर में लगाने से त्वचा के अनेक रोग दूर हो जाते है। त्वचा के रंग में निखार भी आता है।

''कलश'' पवित्र जल होता है, जो व्यक्ति अथवा घर के शुद्धीकरण के लिए उपयोग किया जाता है। इस पवित्र कार्य में निम्नलिखित वृक्षों की पत्तियों का उपयोग होता है। अश्वत्थ (पीपल), आम (औदुबरा) अत्ति किरूगोली (पलाश), गोली (न्योग्रोध) या बरगद का पेड़। इन वृक्षों को पंच पल्लव के नाम से जाना जाता है। कटहल की पत्तियों का धार्मिक अनुष्ठानों में एक विकल्प के रूप में उपयोग होता है, वैसे धार्मिक ग्रंथों में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता।

इस प्रकार गृह के पास उपरोक्त वृक्ष लगाने से हमारे जीवन में सुख शांति तथा समृद्धि मिलती है तथा साथ ही हमारे अन्य स्वास्थ्य सम्बंधी आवश्यकता पड़ने पर लाभदायक तथा हितकारी होता है इसलिए गृह के समीप उपर्युक्त वृक्ष लगाना अत्यंत शुभदायक होता है।

ब्राह्मणों के लिये शुभ वृक्ष :–
सुरदारूचन्दन शमी मधूकतरवः तथा।
ब्राह्मणानां शुभा वृक्षा सर्वकर्मषु शोभनाः।।[8]

(विश्वकर्मा प्रकाश/अ ८/१)

देवदारू, चन्दन, शमी (छोकर) महुआ ये वृक्ष ब्राह्मणों के लिये शोमन और सब कर्मो के लिये श्रेष्ठ हैं। कुछ विद्वान् इन्हें ब्राह्मण वृक्ष भी कहते हैं। ज्ञान के पिपासु एवं आध्यात्मिक लोगों के लिये ये वृक्ष उत्तम फल को देने वाले कहे गये हैं।

क्षत्रियों के लिये शुभ वृक्ष :–
क्षत्रियाणां तु खादिर बिल्वार्जुन कंशिशियाः।
शाल त्नीक सरला नृपवेश्मि सिद्धिदा।।[9]

(विश्वकर्मा प्रकाश/अ८/श्.२)

शाल खदिर, तुनिका, सरल ये वृक्ष क्षत्रियों के लिये, राजाओं के लिये, राज कर्मियों के लिए शुभ होते हैं। इनकी कठोरता एंव दृढ़ता के कारण ये वृक्ष क्षत्रीय वृक्ष कहलाते हैं।

वैश्यों के लिए शुभ वृक्ष :–
वैश्यानां खादिरं सिन्धुस्यंदनाश्च शुभवहाः।[10]

(वि. प्रकाश/अ८/श्लो.३)

वैश्यवर्ग के लिये, व्यापारी लोगों के घरों के बाहर खदिर, सिन्धु, स्पंदन ये वृक्ष शुभफलदायई कहे गये हैं।

शूद्र लोगों के लिये वृक्ष :–
तिन्दुकार्जुनशाशाश्च वैसराम्राश्च कण्टकाः।
ये चान्ये श्रीरिवृक्षाश्च ते शूडाणां शुभावहा।।[11]

(वि. प्रकाश/अ. ८/४)

तिन्दुक, अर्जुन, शाश, वैसर, आम कंटक और अन्य जो क्षीरवृक्ष (दूध देने वाले) वृक्ष हैं, वे शूद्रों के लिये, सेवाधारी व्यक्तियों के लिये शुभ कहे गये हैं।

वेध दोष का निराकरण बिल्व, आम व अनार वृक्ष से :–
अन्तरारोपतिः वृक्ष बिल्व दाडिम केसराः।
न तत्र वेधदोषः स्यात् सत्यं ब्रह्ममुखच्छ्रतम्।।[12]

(वि.प्रकाश/१३/श्लो. ६५)

पश्चिम में कमलों सहित जल हो, उत्तर में खाई हो, पूर्व में फलवाले वृक्ष हों और दक्षिण में दूध के वृक्ष हों। जिस मंदिर के मध्य में बेल (बिल्ववृक्ष) आम, अनार के वृक्ष हों तो उसमें वेध का दोष नहीं रहता। यह सत्य बात ब्रह्मा के मुख से सुनी है।

ऐश्वर्यशाली घर की पहचान :–
जम्बीरैः पुष्पवृक्षैश्च पनसैर्दाडिमैस्तथा।
जातीभिर्मल्लिकामिश्च शतपत्रैश्च के सरैः
नालिके रैश्च पुष्पैश्च कर्णिकारैश्च किशुंकैः।[13]

(विश्वकर्मा प्रकाश/१३/श्. १००–१०३)

वेष्टितं भवनं नृगां सर्वसौख्य प्रदायकम्।।
आदौ वृक्षाणि विन्यस्म पश्चाद् गेहानि विन्यसेत्।
अन्यथा यदि कुर्यात्तु तद्गृहं नैव शोभनम्।।[14]

(वि. प्रकाशन/१३/१०३)

वास्तु शास्त्राकार कहते हैं कि पहले भूखण्ड को वृक्षादि से सुशोभित करें, पहले शुभ मुहूर्त में भूखण्ड पर वृक्ष लगाएं पीछे गृह का निर्माण करें, अन्यथा वह शुभ नहीं होता।

जम्बीर, पुष्प के वृक्ष, पनस, अनार (दाडिम) जाती चमेली, शतपत्र (कमल) केसर, नारियल पुष्प और कार्णिकार (कनेर) से वेष्टित घर मनुष्य को सम्पूर्ण प्रकार के सुख व ऐश्वर्य प्रदान करता है।

फल वाले वृक्ष पूर्व दिशा में लगाएं :–
पूर्वेण फलिता वृक्षः क्षीरवृक्षाश्च दक्षिणे।
पश्चिमेन जलं श्रेष्ठं पद्योत्पल भूषितम्।।[15]

(वि. प्रकाश/अ/७/१०६)

बगीचे या खेत में पूर्व दिशा की ओर फलवाले वृक्ष लगाने चाहियें क्योंकि वे उस दिशा में उत्तम फल देते है। दक्षिण दिशा में क्षीर (दूध) वाले वृक्ष तथा पश्चिम दिशा में पक्ष और उत्पलों से भूषित वृक्ष श्रेष्ठ होते हैं।

ग्राह्य वृक्ष :–
सुरदारूचन्दन शमी शिंशियाः खदिरस्तथा।
शालाः शालविस्तृताश्च प्रशस्ताः सर्वजातिषु।।[16]

(वि. प्रकाश/अ/७/१०७)

देवदारू, चन्दन, शमी, शिंशिया, खदिर, शाल और शाल विस्तृत अर्थात् शाल के समान विस्तार वाले वृक्ष सभी जातियों के लिये समान रूप से श्रेष्ठ हैं।

त्याज्य काष्ठ :–
श्मशाने नाग्निना चैव दूषितै ऽप्यथवाः भुवा।
वज्रेण मर्दित चेव वतभग्नं तथैव च।।
मार्गवृक्षं पुराच्छन्नं चैत्यं कल्पं च दैवकम्।
अर्द्धमग्नार्द्धदग्धाश्च अर्द्धशुष्कास्तथैव च।
व्यग्डकुब्जाश्च काणाश्च अन्य वृक्षेण भेदिता।।[17]

(वि. प्रकाश/अ/८/११–१३)

श्मशान अग्नि, श्मशान भूमि से दूषित और विद्युत (वज्र) से मर्दित, और पवन से भग्न (टूटा) मार्ग का वृक्ष, लताओं से आच्छन्न चैत्य (चबूतरा) का वृक्ष, कुल का वृक्ष, अर्थात् अपने पूर्वजों द्वारा लगाया गया वृक्ष, वृक्ष देवता का वृक्ष, अर्द्धभग्न, अर्द्धदग्ध, तिरछे, कुबड़े व काणे, अत्यन्त जीर्ण, शीर्ष, तीन शिखा वाले, बहुत शिरों वाले वृक्ष की लकड़ी को घर में नहीं लाना चाहिये। शास्त्रों ने उपरोक्त लक्षणों वाले वृक्षों को त्याजय काष्ठ की श्रेणी में लिया है।

वर्ज्य–वृक्ष :–
स्त्रीनाम्ना ये च तरवस्ते वर्ज्या गृहकर्मणि।
क्षीरिणः क्षीरनाशाय फलिनः पुत्रनाशनाः।।[18]

(वि. प्रकाश/८/१४)

जो वृक्ष स्त्री के नाम से प्रसिद्ध है, वे भी घर के कामों में वर्जन योग्य है। जैसे मालती, चम्पा, चमेली, जूही इत्यादि। दूध वाले वृक्ष दूध को और फल दाता वृक्ष पुत्रों को नष्ट करते हैं।

मालतीं चैव चम्पां च केतकी कुन्देमेव च।
मुनिवृक्ष ब्रह्मवृक्षं वर्जयेद् गृह सन्निधौ।।[19]

(वि. प्रकाश/अ/८/१५)

मोतिया, चम्पा, केला, कुन्द, मुनिवृक्ष (पतंग), और आंवले का वृक्ष गृह के समीप अशुभ फलकारी होते हैं। चूंकि चम्पा, केवड़ा (रातरानी) जैसे अत्यधिक सुगन्धित व ठंडक देने वाले पौधों के नीचे जहरीले सांप व कीड़े आकर रात्रि विश्राम करते हैं, इससे गृहस्वामी के जीवन पर संकट आ सकता है। इसलिये इन वृक्षों को घर के समीप लगाने हेतु मना किया गया है।

तिन्तिडीको वटः प्लक्षः पिप्पलश्च सकोटरः।
क्षीरी च कष्टकी चैव निषिद्धास्ते महिरूहाः।।[20]

(वि. प्रकाश/८–१६–१७)

इमली, बरगद (वट), पकरिया (पाकड़) कोटर युक्त पीपल, (खोखलदार पीपल) दूध वाले तथा

कांटे वाले वृक्ष यदि घर के समीप हों तो अशुभ फलकारी होते हैं ये वृक्ष गृहस्वामी को पीड़ा देते हैं

कण्टकी कलहं कुर्यात्काकाच्छन्नं धनक्षयम्।
गृध्रवृक्षं महारोगं श्मशानस्थं मृतिप्रदम्।।[21]

(वि. प्रकाश १८–१६)

कंटकी (कांटो वाला) वृक्ष कलह–कारक है। जिस पर काक बैठते हों वह वृक्ष धन का नाश करता है। जिस वृक्ष पर गीध बैठते हों, वह रोग देता है तथा श्मशान का वृक्ष मृत्यु प्रदाता कहा गया है।

वज्रांक वज्रभयदं वातदं वातदूषितम्।
मार्गवृक्षे कुल ध्वस्तं पुरच्छन्न भयप्रदम्।।
कुल्ये वृक्षे भवेन्मृत्युः देववृक्षे धनक्षयम्।
चैत्ये गृहपतेः मृत्युः देववृक्षेमयं भवेत्।।[22]

(वि. प्रकाश ८/२०–२१)

जिस वृक्ष पर बिजली गिरी हो व वज्रभय (भयानक दुर्घटना) को देता है पवन से दूषित हो वह वातभय को देता है। मार्ग के वृक्ष से कुल का ध्वंस होता है। कुल के वृक्ष से मृत्यु, देववृक्ष से धननाश, चैत्य के वृक्ष से गृहस्वामी की मृत्यु, कुलदेव के वृक्ष से भय होता है।

त्याज्य काष्ठ :–
अर्द्धभग्नं विनाशाय, अर्धशुष्कं धनक्षयम्।
व्यंगे मृत प्रजा जेयाः, कुब्जे कुब्जास्तथैव च।।
काणे राजमयं विद्यात्, अतिजीर्णे गृहक्षयः।
त्रिशीर्षे गर्भपातः स्यादबहुशीर्षे मृतप्रजा।।[23]

(वि. प्रकाश ८/२१–२२)

अर्द्धभग्नं वृक्ष मिनाश को और अर्द्धशुष्क धन के क्षय के आमन्त्रित करता है। व्यंग (टेढ़े–मेढ़े–डरावाने) से प्रजा (सन्तान) का मरण जानना। कुब्ज से कुब्ज (कुबड़े) संतान की प्राप्ति होती है। काणे वृक्ष से राजा का भय, अत्यन्त जीर्ण वृक्ष से घर का क्षय, तीन सिर के वृक्ष से गर्भपात और अनेक सिर (शाखा) के वृक्ष की लकड़ी से सन्तान का मरण होता है।

शय्या निर्माण हेतु शुभ वृक्ष :–

मनुष्यों को सब प्रकार से उत्तम सुख प्राप्त हो इसके लिये उपरोक्त वर्ज्यत्याज्य काष्ठ को कभी भी शय्या (पलंग) निर्माण हेतु ग्रहण न करें। पूर्वोक्त निषिद्ध वृक्षों की शय्या बनवाने से कुल का नाश, व्याधि और शुत्र भय के कारण व्यक्ति को ठीक से निन्द्रा नहीं आयेगी। शय्या हेतु उत्तम काष्ठ के निमित्त शास्त्रकार कहते हैं –

कथयामि तथा शय्यां येन सौख्यवाप्नुयात्।
अशनस्पन्दन–चन्दनहरिद्रु
सुरदारू–तिन्दुकी–शालाः।
काश्मर्यार्जुन पद्यकशाकाम्राः शिशिंया च शुभाः।[24]

(वि. प्रकाश १०/४८)

अशन, स्पन्दन, चन्दन, हरिद्रु, देवदारू, तिंदुकी, शाल (सागवान) काशमरी, अर्जुन, पद्यक, शाक, आम्र, शिशंया के वृक्ष शय्या बनाने में शुभ व उत्तम कहे गये हैं। शास्त्रकारों ने इन वृक्षों की शय्या के अलग–अलग फल विस्तार से इस प्रकार से कहे हैं।

अशन रोग को हरता है। तिन्दुक की शय्या पित्त करती है। चन्दन की शय्या शत्रु को नष्ट करती है और धर्म, आयु व यश को देती है। शिशंया वृक्ष से उत्पन्न हुई शय्या महान् समृद्धि देती है। पद्यक कार्यक (पलंग) दीर्घ अवस्था तक लक्ष्मी–पुत्र, अनेक प्रकार के धनों को देता हुआ, शत्रुओं का नाश करता है। शाल कल्याण दाता है। शाक और सूर्य के वृक्ष से केवल चन्दन से निर्मित पर्यकं जो रसों से जड़ित हो, जिसका मध्य भाग सुवर्ण से युक्त हो, उस पर्यकं की पूजा देवता भी करते हैं।

शाक और शाल देवदारू और श्रीपर्णी पूर्वोक्त शुभफल ही देते हैं। कदम्ब और हरिद्रक (हल्द) में भी पृथक–पृथक श्रेष्ठ है। आम्र की शय्या प्राणों

को हरती है। अन्य काष्ठ के साथ असन धन के संक्षय (संरक्षण) को करता है। उदुम्बर (गूलर) वृक्ष, चन्दन और स्पंदन शुभ होते है। इसमें हाथी दांत का अलकंरण भी शुभ फल देता है।

कलहकारी वृक्ष :–

खर्जूरी दाडिमी रम्भा कर्कन्धू बीज पूरिका।

उत्पद्यन्ते गृहे यत्र तस्मिन् कृन्तति मूलतः।।[25]

(वि. प्रकाश १०/४६)

खजूरी, दाडिमी, केला, बदरी (बेर, बोरटी) और बिजौरा, नीम्बू, जिस घर में स्वयं उत्पन्न होंगे, तो उस घर का सर्वनाश कर डालेंगे। वहां कलह रहेगा।

वृक्ष छाया का दोष :–

वृक्ष प्रसादिनी छाया संच्छत्रं यदि मन्दिरम्।

अचिरेणैव कालेन उद्वसनं जायते ध्रुवम।।[26]

(वृहत्संहिता ५४/७/३७७)

वृक्षों की सघन छाया जिस घर में बराबर रहती हो, वह घर उजड़ जाता है।

वृक्ष छाया दोष निवृत्ति :–

यामाद्ध्वं तु या छाया वृक्षप्रासादसंम्भवा।

वर्जयेतां प्रयत्नेन यावद्वै है प्रहरद्रयम्।।[27]

(वृहत्संहिता ५४/१०/३७७)

जिस घर में वृक्षों की छाया प्रहर भर (चार घंटे) से ऊपर और दो प्रहर के अन्दर ठहरती हो, उस वृक्ष की निवृत्ति शीघ्र कर देनी चाहिये अर्थात् वृक्षों की शाखाएं काट कर छाया की निवृत्ति करा देनी चाहिये।

वृक्ष छाया दोष :–

प्रथमान्तयामवर्ज द्वित्रिप्रहरसम्भवा।

छाया वृक्षाध्वजादीनां सदा दुःख प्रदामिनी।।[28]

(वृहत्संहिता ५४/११/३७७)

जिस घर में वृक्षों तथा पताकाओं की छाया प्रथम और अन्तिम प्रहर को छोड़कर, दो–तीन प्रहरों तक बराबर रहती हो, तो सदा दुःख देने वाली होती है। इस प्रकार वृक्षों में बताया गया है जो गृह में लगाने से शुभ तथा अशुभ माना जाता है। वास्तु विद्वानों के अनुसार गृह में शुभ वस्तुओं का रखना भी एक गृह के लिए विशेष महत्त्व होता है।

1 पर्यावरण वास्तु शास्त्र १/५०
2 पर्यावरण वास्तुशास्त्र २/५०
3 वृहत्संहिता ५३/८६
4 (समरागण सूत्रधार ३८/१३६)
5 ब्रहदैवज्ञ ८७/६)
6 (ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्ण १०३/६२–६३)
7 वास्तुसौख्यम् पृ.क्र.३८)
8 (विश्वकर्मा प्रकाश/अ ८/१)
9 (विश्वकर्मा प्रकाश/अ८/श्.२)
10 (वि. प्रकाश/अ८/श्लो.३)
11 (वि. प्रकाश/अ. ८/४)
12 (वि.प्रकाश/१३/श्लो. ६५)

13 (विश्वकर्मा प्रकाश / १३ / श. १००–१०३)
14 (वि. प्रकाशन / १३ / १०३)
15 (वि. प्रकाश / अ / ७ / १०६)
16 (वि. प्रकाश / अ / ७ / १०७)
17 (वि. प्रकाश / अ / ८ / ११–१३)
18 (वि. प्रकाश / ८ / १४)
19 (वि. प्रकाश / अ / ८ / १५)
20 (वि. प्रकाश / ८–१६–१७)
21 (वि. प्रकाश १८–१९)
22 (वि. प्रकाश ८ / २०–२१)
23 (वि. प्रकाश ८ / २१–२२)
24 (वि. प्रकाश १० / ४८)
25 (वि. प्रकाश १० / ४९)
26 (वृहत्संहिता ५४ / ७ / ३७७)
27 (वृहत्संहिता ५४ / १० / ३७७)
28 (वृहत्संहिता ५४ / ११ / ३७७)

RESEARCH INNOVATOR